IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 4, March 2024

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में भाषा को बढ़ावा

डॉ. ज्योति जोशी
एसिस्टेन्ट प्रोफेसर, संस्कृत विभागाध्यक्ष
एस. एस. जैन सुबोध गर्ल्स पी. जी. कॉलेज सांगानेर

भारत संस्कृति का एक खजाना है और कला, साहित्य, रीति–रिवाजों, परम्पराओं, भाषाई अभिव्यक्तियों, कलाकृतियों, विरासत स्थलों और अन्य कार्यों के रूप में प्रकट होता है। सृष्टि के निर्माण काल से ही भाषा कासंबंध मानव समाज से रहा है। मानव जीवन में भाषा एक अभिन्न अंग है जिसके बिना मानव गूंगा है। संस्कृत एक प्राचीन भाषा है। इसमें ज्ञान का असीम भण्डार है। संस्कृत में हमारी सांस्कृतिक विरासत समाहित है। नैतिक व राष्ट्रीय मूल्य संस्कृत में विद्यमान है। छात्रों में मूल्य एवं सांस्कृतिक शिक्षा के लिये संस्कृत ज्ञान आवश्यक है। हिन्दी भाषा का साहित्य अत्यंत समृद्ध है और यदि हम एक भाषा के माध्यम से साहित्य के क्षेत्र में इतने आगे बढ़ सकते हैं तो ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में भी सफलता प्रापत कर सकते हैं।

भौतिक, रसायन, खगोलिक विज्ञान, चिकित्सा शास्त्र सभी विषयों पर संस्कृत, हिन्दी आदि भाषाओं में लिखा जा सकता है। अन्तर्राष्ट्रीय जगत में कोई भी भाषा हो उसकी सरलता पर ध्यान दिया जानाचाहिये, क्योंकि आज की युवा पीढत्री सरल भाषा और ज्ञान–विज्ञान के मौलिक ग्रन्थों की मांग करती है। भाषा के विकास के लिये अनिवार्य हैं। प्रारम्भिक पढ़ाई मातृभाषा में हो। शिक्षा ही मानव को मानव बनाती है। अन्यथा वह साक्षात् पशु है जो केवल काम करना या पेट भरना जानता है। शिक्षा द्वारा ही मनुष्य विभिन्न क्षेत्रों में प्रतिभा का विकास करता है। भारतीय संस्कृति एवं मूल तत्वों पर भाषा आधारित होनी चाहिये।

मानव जीवन का चरम लक्ष्य आत्मनुभूति है। ईश्वर के प्रति आस्था उत्पन्न करना शिक्षा का एक लक्ष्य होना चाहिये। इस कार्य में देववाणी अधिक सक्षम हो सकती है। राष्ट्रीय भावना के विषय में भारतीय साहित्य में अनेकशः वर्णन विद्यमान है। उच्च शिक्षा में इनका उपयोग होना चाहिये। जिन भाषाओं का प्रयोग जनता करती है, वही जीवित रहती है। जब उच्च शिक्षा का माध्यम भारतीय भाषाएं बनेगी, तभी व्यक्ति अपने ज्ञान और विचार की समृद्ध परम्परा से परिचित हो पाएगा।

मुख्य बिन्दु :– संस्कृति, रीति–रिवाज, कलाकृति, अभिव्यक्ति, ज्ञान–विज्ञान, आत्मनुभूति, राष्ट्रीय भावना आदि।

प्रस्तावनाः

भाषा ध्वनि को अर्थ से जोड़ने वाली एक अमूर्त व्यवस्था है, जो मनुष्य को सोचने और परस्पर विचार विनिमय का साधन है। इसके द्वारा हम ज्ञान का संचय करते हैं और उसे एक–दूसरे को साझा करते हैं। भाषा के कारण ही मानव सभ्यता का इतना अधिक विकास हो पाया है। इस दृष्टिसे भाषा मनुष्य की सांस्कृतिक विरासत और पहचान भी है। भाषा का एक–एक शब्द महत्त्वपूर्ण होता है। प्रत्यक शब्द अपने पीछे संस्कृति की एक लम्बी परम्परा को लेकर चलता है। इसलिए भाषा लुप्त होते ही संस्कृति पर खतरा मंडराने लगता है। संस्कृति और उस भाषा के संचित ज्ञान को बचाने के लिए भाषा के सरंक्षण की बहुत आवश्यकता है। भारत की नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में सभी भारतीय भाषाओं विशेषकर मातृभाषाओं को प्राथमिक स्तर अनिवार्य शिक्षा का मध्यम बनाए जाने की बात कही गई है। भारतीय भाषाओं के संरक्षण के लिये यह बहुत बड़ा कदम है। इस कार्य के लिये अनेक अकादमी व संस्थान भी खोले जाने की योजना है। मानव के सम्यक् विकास, मन की कल्पना को मूर्त रूप देने, स्वस्थ समाज और समृद्धिशाली व शक्ति सम्पन्न राष्ट्र के निर्माण शिक्षा व महत्त्व निर्विवाद रूप से आवश्यक हैं शिक्षाकीपरम्परा बहुत प्राचीन समय से ही समृद्ध रही है। भारत दुनिया को हजारों वर्षों से ज्ञान के प्रकाश से आलोकित करता रहा है। भारत की महान ज्ञान परम्परा और शिक्षा व्यवस्था ने आर्यभट्ट, वाराहमिहिर, चरक, सुश्रुत, पाणिनि, नागार्जुन गौतम,

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 4, March 2024

मैत्रेयी, गार्गी जैसे अनेक महान विभूतियों को जन्म दिया है। इन विद्वानों ने अपनी भाषा में खगोल, विज्ञान गणित, चिकित्सा विज्ञान, व्याकरण, दर्शन योग अभियांत्रिकी, वास्तुकला, भवन निर्माण आदि में विश्वस को मौलिक योगदान दिया है।

शिक्षा नीति किसी भी राष्ट्र की मूलभूत आवश्यकता होती है, जिसमें अतीत का विश्लेषण, वर्तमान आवश्यकता तथा भविष्य की संभावनाऐं निहित होती है। 2020नई शिक्षा नीति का मुख्य उद्देश्य भाषा दक्षता, वैज्ञानिक स्वभाव, सौन्दर्य बोध, नैतिक तर्क, डिजिटल साक्षरता, भारत बोध और चेतना का विकास करना है। भारतीय संस्कृतिक में गुरु शिष्य परम्परा और गुरुकुल पद्धति का एक स्वर्णिम दौर रहा है।

शिक्षा में हिन्दी भाषा का महत्त्व आज एक आवश्यक मुद्दा बन चुका है। लोग हिन्दी भाषा की बजाय अंग्रेजी भाषा को ज्यादा अहमियत दे रहे हैं। यह भाषा पूरी दुनिया में 50 करोड़ से भी अधिक लोगों के द्वारा बोली और समझी जाती है। यह भाषा भारतीय की पहचान और इसके साथ ही हमारे जीवन के मूल्यों, संस्कृतिक एवं संस्कारों के लिए भी उपयोगी है। हमारी भाषाबहुत सरल और लचीली है। जिसे प्रत्येक व्यक्ति समझ सकता है। हिन्दू भाषा का वैज्ञानिक दृष्टिकोण से पारस्परिक, प्राचीन सभ्यता और आधुनिक प्रगति के कारण ही आज पूरा विश्व हमारी भाषा को समझने की कोशिश कर रहा है। बच्चे की जीवन की शुरूआत मातृभाषा से ही होती है, जो कि उसके जीवन का आधार रखती हैं जो आगे चलकर उसका भविष्य की तय करती है। भारतीय संविधान के अनुसार हिन्दी भाषा को भारत की राजभाषा बनाया गया है। भारत की बहुभाषिक स्थिति को देखते हुए बच्चों के मानसिक स्तर के अनुसार त्रिभाषा सूत्र बनाया गया है, जिसके अनुसार माध्यमिक स्तर पर बालक को कम से कम तीन भाषाएं पढ़नी होगी जो कि मातृभाषा, अंग्रेजी भाषा हिन्दी भाषा की शिक्षा दी जाए। भाषा सम्बनधी विविध आयामों को ध्यान में रखते हुए नई शिक्षा नीति में इस बात पर जोर दिया गया है कि सभी भाषाओं के शिक्षण को नवीन और अनुभवात्मक विधियों के माध्यम से समृद्ध किया जाएगा और भाषाओं के सांस्कृतिक पहलुओं जैसे कि फिल्म, थिएटर और कथावाचन, काव्य और संगीत को जोड़ते हुए इन्हें सिखाया जाएगा। भाषाओं का शिक्षण भी अनुभवात्मक अधिगम शिक्षण शास्त्र पर आधारित होगा। अधिक उच्चतर शिक्षण संस्थानों तथा उच्च शिक्षा के स्तर पर विविध कार्यक्रमों में माध्यम के रूप में मातृभाषा स्थानीय भाषा का उपयोग किया जाए अथवा इन कार्यक्रमों को द्विभाषिक रूप से चलाया जाए यह निर्देश भी अपने आप में एक बड़ा कदम है। भारतीय भाषाओं को उच्च शिक्षा के क्षेत्र में सही ढंग से प्रोत्साहन मिले इसके लिए नई शिक्षा नीति में आई.आई.टी.आई. की स्थापना की बात अत्यन्न महत्त्वपूर्ण है। अकादमियों, पाण्डुलिपियों को इकट्ठा करना, संरक्षण करना, अनुवाद करना आदि उनके अध्ययन में चार चांद लगाऐगी। नई शिक्षा नीति में सस्कृत भाषा का विकास तेजी से होगा इसके लिये भरसक प्रयास किये जा रहे हें यह भाषा एक परिमार्जित भाषा है। नासा ने तो अपने सभी शोधों के माध्यम से संस्कृत भाषा को कम्प्यूटर की भाषा माना हैं संस्कृत को संसार की सभी भाषाओं की जननी कहा जाता है। यह भारतीय संस्कृति ओर सभ्यता की संवाहक भाषा भी मानी जाती है। जानकारी के लिहाज से यह एक बेजोड़ भाषा है। वेदों की रचना इसी भाषा में की गई यह शुद्धता का भी प्रमाण है। इसके आंचल में हिन्दी, पाली, प्राकृत आदि कई भाषाऐं विकसित हुई है। भारत वर्ष के समस्त प्राचीन ज्ञान भण्डार संस्कृत में ही है। भारतीयों के सभी धर्मग्रन्थ, पुराण, उपनिषद्, रामायण, महाभारत, स्मृतिग्रन्थ, धर्मशास्त्र, महाकाव्य, काव्य, नाटक, गद्यकाव्य, गतिकाव्य, आख्यान साहित्य आदि संस्कृत में ही है। इतना ही नहीं व्याकरण, काव्यशास्त्र, गणित, ज्योतिष, नीतिशास्त्र, कामशास्त्र, आयुर्वेद, धनुर्वेद, वास्तुकला, अर्थशास्त्र राजनीतिशास्त्र, इतिहास, छंदशास्त्र और कोषग्रन्थ तक संस्कृत भाषा में उपलब्ध है। ज्ञान–विज्ञान का ऐसा कोई अंग नहीं है जो संस्कृत भाषा में उपलब्ध नहीं है। यह प्राचीन ऋषि, महर्षियों का ही फल है कि इतना वाड्.मय संस्कृत में उपलब्ध है। गीता नामक ग्रन्थरत्न जो संस्कृत साहित्यमाला का मध्यमणि है, जिसने संस्कृत के गौरव को बढ़ाया हैं इसके अतिरिक्त कालिदास, मास, भवभूति प्रभृतिभि विश्वविख्यात महाकवियों के द्वारा रचित महाकाव्य व नाटक

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 4, March 2024

समस्त संसार में सम्मानित है। पाणिनी, कात्यायन, पतंजलि आदि ने तो लोक में प्रचलित शब्दों को आधार मानकर शास्त्र के नियम बनाये हैं।

हम आशा कर सकते हैं कि भारतीय भाषाएं नए भारत को गढ़ेगी। जिसके नागरिक अपनी भाषा, संस्कृति, परम्परा और विरासत के प्रति गौरव के भाव से संपृक्त होंगें और भारत ज्ञान के एक शिखर के प्रमाण पर होगा। हम सर्वोत्तम परिणामों की आशा के साथ कह सकते हैं कि छात्रों के समग्र विकास और प्रगति को ध्यान में रखते हुए लाई गई।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

1. भारत की नींव–2, 2020
2. भाषा विज्ञान– भोलानाथ तिवारी, पृ. 3–4
3. साहित्य का इतिहास–परमानन्द गुप्त।
4. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास, डॉ. कपिल द्विवेदी।
5. मेरे सपनों का भारत, पृ. 96
6. राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 पृ.8
7. संस्कृत पत्रकारिता का इतिहास– डॉ. रामगोपाल मिश्र
8. संस्कृत साहित्य का इतिहास–डॉ. ए.बी. कीथ।